IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुण्डारी गीत एंव कविता में प्रकृति

सोमा महतो

शोधार्थी,मुण्डारी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध-आलेख सार :- यह लेख मुंडा जनजाति की संस्कृति, भाषा, और उनके गीतों व कविताओं में प्रकृति के महत्व पर प्रकाश डाला गया है |

मूलशब्द :- मुंडा जनजाति, मुण्डारी भाषा, प्रकृति चित्रण, संस्कृति, प्रेम

मुंडा जनजाति :- मुंडा जनजाति भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है यह जनजाति प्रजातीय रूप से प्रोटो-ऑस्ट्रेलायड समूह से सम्बंधित है, जो अपनी विशिष्ट जीवनशैली, संस्कृति और परम्पराओं के लिए जनि जाती है | यह जनजाति मुख्य रूप से झारखण्ड, छतीसगढ़, ओडिशा और प. बंगाल के कुछ हिस्सों में निवास करती है |

मुण्डारी भाषा :- मुंडारी भाषा भारत में मुख्यतः झारखंड के मुंडा जनजाति की भाषा है । भारत में यह झारखंड के अलावा पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश आदि राज्यों के कुछ इलाकों में भी बोली जाती है। । भाषा वैज्ञानिकों ने मुंडारी को आस्ट्रिक भाषा परिवार के अंतर्गत रखा है |

मुंडाओं की संगीत-प्रियता के रहस्य :- मुण्डा जाति बहादुर परिश्रमी और स्वतंत्रताप्रेमी तो है ही। साथ ही बहुत-सी आदिम-जातियों की तरह इनके जीवन में हम कला, सुरुचि और सौन्दर्य का भाव ओत प्रीत पाते हैं। यह कला-प्रियता और मस्ती आदिवासियों को प्राकृतिक जीवन की देन है। इसी वरदान को पाकर वे जातियाँ अपने को दुखों-अभावों की प्रखर-धारा में बहाती और संघर्ष की भीषण ज्वाला में जलने से बचाती रही हैं। यह मस्ती वह काली घटा है जिसने इनके विपत्तियों से झुलसे हुए मन को सींचा है और अपने प्यार की थपकी से इनके थके मन को शान्ति की गोद में सुलाया है। मुण्डाओं के सौन्दर्य-बोध और संगीत-प्रियता को समझने के लिए जगदीश त्रिगुणायत ने पाँच प्रमुख कारण गिनाएहैं – प्रकृति की रंगस्थली, एकांत और सूनापन, स्वतंत्रता, परिश्रम और विकास का शौशव | उनके खान-पान और सामाजिक व्यवस्था को भी वे संगीत प्रियता का कारण मानते हैं |

प्रकृति-प्रेम :- अपनी चिर-संगिनी प्रकृति की आत्मीयता इनके गीतों में सब जगह दिखाई देती है। फूल और पंछी, वृक्ष और लता, पहाड़ और घाटियाँ तथा नदी और निर्भर इनके रात-दिन के साथी है। इनके साथ मुण्डा का आत्मीय भाव है, ये उसके सहचर है। इन्हीं से हँस-बोलकर उसका जीवन विकसित होता है। इसलिए उन्नत भाषाओं में प्रकृति-वर्णन का जो तात्पर्य समझा जाता है, वैसा प्रकृति-वर्णन आदिवासी कविता में नहीं है। दोनों में बड़ा स्पष्ट अन्तर है। उन्नत भाषाएँ बोलनेवालों का जीवन प्रकृति से दूर हो गया है। उनकी अपनी संस्कृति कहिए या विकृति, ह्रास कहिए या विकास, इस परिवर्तित दशा में उन्होंने अपनेको प्राकृतिक जीवन से हटा लिया है। इसलिए प्रकृति उनके लिए अपरिचिता हो गई है। वे कभी-कभी अपने वास्तविक जीवन से दूर हटकर प्रकृति को प्यार करने जाते हैं, उसकी छटाओं से मुग्ध होते हैं। किंतु इस अभियान में उनके पाण अपनी सभ्यता के ऊँचे कोठे पर ही छूट गये होते हैं। वे प्रकृति के साथ घुल-मिलकर एक नहीं हो पाते। इसलिए वे प्रकृति के जिस रूप का चित्रण करते हैं, वह शहर के पार्क के बीच मन बहलाव के लिए लगाई हुई जंगली झाड़ी के समान जान पड़ता है। अभिजात वर्ग के कवियों का प्रकृति-प्रेम श्रीनगर के निशात-बाग का बनावटी निर्भर है; दिल्ली के बिड़ला मन्दिर में बनी हुई मिट्टी की पहाड़ी है और जयपुर के कृत्रिम-नगर में चिड़ियाघर के लिए बना हुआ जंगल है। जो स्पष्टतः ही पाठकों के मन- बहलाव की वस्तु है। कालिदास चित्रकूट के पर्वत-शिखर पर से मेघ के द्वारा अलकापुरी सन्देशा भेज चुकने के बाद फिर उज्जयिनी के राजमहलों में लौट जाता है। वड्र्सवर्थ पहाड़ी के नीचे धान के खेतों में गाती हुई लड़की की टेर से थोड़ी देर मन दहलाकर फिर क्लब की ओर चला जाता है। और अन्धासूर अपनी बन्द आँखों से वृन्दावन के करील- कु'जों में रास-लीला के दृश्य देखकर फिर अपने तानपूरे के स्वरों में खो जाता है। किन्तु मुण्डा प्रकृति के आँगन में कहीं से चलकर नहीं आता और वहाँ से चलकर उसे अन्यत्र कहीं नहीं जाना है।

मुण्डा का प्रकृति-प्रेम रेशम के पर्दे पर जरी के तारों से बनाया हुआ गुलाब का फूल नहीं है। इसलिए उसमें कोई फैशन नहीं। अभिजात कविताओं में जीवन के रंगमंच पर जो व्यापार दिखाये जाते हैं, उनकी पृष्ठभूमि में ऐसे पर्दे होने चाहिए, जिनमें प्रकृति के चित्र उतारे गये हों। नकली जंगल और पहाड़ रंगों से बने हुए नदी-निर्भर और रेखाओं से बने हुए फूल-पक्षी। किन्तु मुण्डा-जीवन के रंगमंच पर इन छटाओं को कहीं से जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। जिन छवियों के लिए अभिजात कलाकार परेशान होते रहते हैं, वे मुण्डा-जीवन की पृष्ठभूमि में नैसर्गिक रूप से विद्यमान है। इस तरह का एक गीत प्रस्तुत है जिसमें वन और तालाबों में उछलने-कूदते पशु-पक्षियों का वर्णन है –

आटा-माटा बिरको ताला रे घनघोर वन के बीच
बीर जिलु को चाड़ाद-चुडुदा मृग उछल रहे हैं
बिर जिलु को चाड़ाद-चुडुदा । हरिण कूद रहे हैं।

बानदा-पुखुरि गुले-गुले भरपूर बाँध और पोखरों में
आएरा-चिरपि बिजिर-बिजिरा आएरा और चिरपि मछलियाँ तैर रही हैं
आएरा-चिरपि बिजिर-बिजिरा । आएरा और चिरपि मछलियाँ तैर रही हैं।

बोओः चेतान हेनदे रिमबिल सिर के ऊपर काले आसमान में
चांडुः इपिल निदा-निराला रात को चाँद-तारे निराले लगते हैं
चांडुः इपिल निदा-निराला । रात को चाँद-तारे निराले लगते हैं|

उपमा और रूपक रूप में चित्रण :– मुण्डा-गीतों में बड़ी सुन्दर उपमाओं का प्रयोग किया गया है और वैसे ही मनोहर रूपकों का भी, जो दृश्य के रूप-विधान में चार चाँद लगा देते हैं।

1. आलाकन-बा लेकन डिंडा-सोमय ।(जवानी का समय खिले हुए फूल के समान है।)

2. पुतम् लेका होलं जुड़ी-जना । (पण्डुक के समान हमारी जोड़ी हुई ।)

3. हाय गति सोना हुन्दी-ब्रा। (हे प्रिय सोना के समान हुन्दी फूल ।)

आलम्बन और उद्दीपन रूप में चित्रण :- वसन्त और प्रकृति के श्रृंगारों का वर्णन आलम्बन और उद्दीपन के रूप में किया गया है जो विरह-मिलन की अनुभूतियों को बढ़ाते हैं, रात दिन नाचने को प्रोत्साहित करते हैं और अपने आकर्षण वातावरण में अटल-प्रेम की सौगन्ध दिलाते हैं।

चित्र-विधान रूप में चित्रण :- कुछ गीतों में मधुर उपमाओं की सहायता से सुन्दर दृश्य अंकित किये गये हैं और समूचा गीत ही एक मधुर-चित्र के समान जान पड़ता है।

एक युवक पानी भरने जाती हुई एक लड़की की छवि पर मुग्ध हो रहा है -

“डिंडा सोमय तइकेना
फूलइ तेगेम चवाजना
पोलातम दो ना
मइना निरल सड़ितन
मइनम् लन्दातन-गे ।
बो-रेदो सुतम् बिन्डा,
बिन्डा चेतन हसा-चटु,
सेन तदमना
मइना जिड़िव जिड़िवतन
मइनम् लन्दातन गे।
मयं रेदो नीले साड़ी
साड़ी तदम ओरे तनगे
लेलोः तनम - मा,
मइना कदल दारू लेका,
मइनम् लन्दातन – गे”|

मुण्डारी गीतों में प्रयुक्त प्राकृतिक उपकरण :- मुंडारी के गीतों के प्राकृतिक उपकरण हिन्दी या अंग्रजी कविताओं के प्राकृतिक उपकरणों से भिन्न हैं। इन गीतों में मुख्यतः मुंडा क्षेत्रों में पाए जाने वाले पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि का उल्लेख है । कुछ ऐसे भी प्राकृतिक उपकरण हैं जो हिन्दी कविताओं से मिलते-जुलते हैं, जैसे बादल, नदी आदि । 'बाँसरी बज रही' में त्रिगुणायत ने मुंडारी गीतों में प्रयुक्त उपकरणों की लंबी सूची बनाई है जिनमें कुछ उपकरण निम्नलिखित हैं -

फूल : सारजोम् बा (साखू), इचः बा (धवई फूल), तोअ बा (दुधी फूल), मुरुद् बा (पलाश का फूल), गुलंची बा, केवड़ा बा, सुकु बा (कद्दू का फूल), हुंदी बा, सिसि बा आदि ।

लताएँ : सुकु (कद्दू), तएअर (खीरा), संगा (शकरकंद), पलंडू आदि ।

वृक्ष : सारजोम (साखू), मुरुद (पलाश), कदल (केला), बड़े (बरगद), बरु (कुसुम) आदि ।

पक्षी : लिपि, पुतम, मिरु, कुइली (कोयल), दिदी (गिद्ध), मरः (मोर), केरकेटा, डिंचुअ आदि ।

अन्य : जोबेला(जोभी) – जहाँ हरदम पानी रहता है |
जिरकी(दलदल) – जहाँ हरदम कीचड़ रहे |
बेड़ा(उपत्यका) – पहाड़ के किनारे की ढाल य समतल स्थान |
पीड़ी(टांड) – दोन के ऊपर के खेत य मैदान |
बुरु - पहाड़

निष्कर्ष :- मुण्डारी गीत और कविताएँ उनकी संस्कृति, प्रकृति से गहरे लगाव और जीवनशैली को दर्शाती है | मुंडा जनजाति के लिए प्रकृति केवल सौन्दर्य का स्रोत नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व और पहचान का आधार हैं |

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. त्रिगुणायत, जगदीश,बांसुरी बज रही है, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 12, 25, 26, 33, 34, 35, 38, 39, 40, 41
2. कंडे मुंडा, संस-बा(पीले फुल), तृतीय संस्करण, 2018, पृष्ठ 58
3. त्रिगुणायत, जगदीश, मुंडा लोक कथाएँ, प्रथम संस्करण, 1968, पृष्ठ 46